उत्तरांचल विश्वविद्यालय में 'आकाश फॉर लाइफ' सम्मेलन में माननीय राज्यपाल महोदय का संबोधन

(4 नवम्बर 2022)

जय हिन्द!

'आकाश फॉर लाइफ' पर केन्द्रित इस सम्मेलन और विज्ञान प्रदर्शिनी में आप सब के बीच आकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है।

मुझे इस बात की भी बहुत खुशी है कि **'आकाश तत्व'** चिंतन के लिए **इसरो, वाडिया, विज्ञानभारती और अन्य प्रतिष्ठित विज्ञान संस्थाओं, विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिक, विचारक, शोधार्थी, स्वयंसेवक और छात्र–छात्राएं भाग ले रहे हैं। मैं आप सभी प्रतिभागियों को हार्दिक बधाई देता हूं।**

'इसरो' हमारे देश का गौरव है। इसरो ने हमारे देश की कीर्ति को सभी दिशाओं में फैलाया है।

सच कहूं तो 'इसरो' और यहां हर वैज्ञानिक मुझे अपने आप में ऋषि–मुनि जैसे लगते हैं, आप निरंतर ग्रह, उपग्रह, नक्षत्र और तारों के बीच अंतरिक्ष की अनंत गहराइयों में भारतीय तत्व चिंतन को एक आकार और प्रकार दे रहे हैं।

इसरो ने भारत के ज्ञान–विज्ञान को दीप्त, आलोकित और प्रकाशित किया है।

ऐसी तरह **'विज्ञानभारती'** भी भारत की विज्ञान परंपरा को जीवंत प्रवाह दे रही है।

भारतीय विज्ञान प्रणाली को वैश्विक प्रतिमान स्थापित कर रही है।

विज्ञानभारती के स्वयंसेवक भारतीय ज्ञान की उपासना कर रहे हैं। विज्ञान की पताका देश और दुनिया में पहुंचा रहे हैं।

हम सब जानते हैं कि भारतीय विज्ञान वेदों में प्रकट हुआ है। जब दुनिया में कहीं कोई वैज्ञानिक चेतना नहीं थी तभी वेदों में सृष्टि के अनेक सूक्ष्म तत्वों की विवेचना हो रही थी।

पांच महाभूतों का स्वरूप भी वैदिक साहित्य में ही बताया गया है – **आत्मा से आकाश**, **आकाश से वायु**, **वायु से अग्नि**, **अग्नि से जल** और **जल से पृथ्वी** की उत्पत्ति हुई।

ये वही तत्व हैं जो हमें जीवन देते हैं, हमारा पालन करते हैं और विनाश भी करते हैं।

इन में से किसी एक के अभाव में भी पृथ्वी पर जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है।

आज का विषय **'आकाश तत्व'** हैं।

भारतीय दर्शन में आकाश को शाश्वत, अजर, अमर कहा गया है। पांच महाभूतों में से केवल आकाश ही है जो सर्वत्र, सर्वव्यापी, सनातन, अनन्त, अगोचर, जगत् का आधार, निराकार, निर्लिप्त और निर्विकार है।

यहां भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान आकाश तत्व का प्रतिनिधित्व कर रहा है।

इस लिए मैं आश्वस्त हूं कि हमारे वैज्ञानिक भारत के अतीत, वर्तमान और भविष्य की चिन्ताओं का निदान करेंगे और भारत के वैभव के लिए संभावनाओं के द्वार खोलेंगे। नया सृजन करेंगें।

आज समय आ गया है कि हम दूरदर्शी चिंतन, अनुसंधान और नीतियों के बल पर विषम भौगोलिक परिस्थिति क्षेत्रों के लिए Traffic, Transportation, Agriculture, Marketing, Tourism, and Entertainment में Sustainable, Attractive, cost-effective ट्रांसपोर्टस like cable trolleys, cable cars, drones, mono rails

Airlines जैसी तकनीक के विकास की दिशा में आगे बढें।

सामरिक रणनीति के लिए भी आकाशीय टैक्नालॉजी ही हमारी शक्ति का आधार है।

इस लिए मेरा मानना है कि आकाश तत्व हमारी अनंत संभावनाओं के द्वार हैं।

पहाडों में रेल एक सपना था, लेकिन प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने यह संभव बनाया है।

आकाश परिवन के क्षेत्र में प्रधानमंत्री जी ने श्री केदारनाथ जी और हेमकुंट साहिब की यात्रा के लिए **रोप वे** की आधार शिला रखी है।

ये एक अच्छी शुरूआत हुई है और अब हमें इसी दिशा में अपने इन नये विकल्पों पर तीब्र गति से कार्य करना होगा।

पर्यावरण और इको सिस्टम को बचाए रखने के लिए भी यह एक प्रभावशाली विकल्प है।

शून्य उत्सर्जन के लक्ष्य प्राप्त करने के लिए, उर्जा के संतुलित विकल्पों के साथ, इन्वायरमेंट और इकोलॉजी की सुरक्षा के लिए ऐसी तकनीक का विकास करना होगा। हम अपनी स्पेश टैक्नोलॉजी को नैनो

टैक्नोलॉजी तक ले जा सकते हैं ? मुझे पूर्ण विश्वास है हम सभी यह कर सकते हैं।

हमारे स्वप्नदर्शी युवा इस दिशा में अपनी प्रतिभा को दिखाएं। और हम शीघ्र ही आकाश केन्द्रित टैक्नोलॉजी में नये कीर्तिमान अर्जित करें।

मुझे यकीन है कि पंचमहाभूतों पर केन्द्रित विचार मंथन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा घोषित हमारी अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं को पूरा करने में मदद करेंगे।

2030 तक सकल घरेलू उत्पाद उत्सर्जन तीव्रता को 45 प्रतिशत तक कम करने और 2070 तक शुद्ध–शून्य तक पहुंचने के दीर्घकालिक लक्ष्य के लिए हमारी प्रतिबद्धता को सही दिशा देंगें।

मैं आकाश तत्व पर केन्द्रित इस सम्मेलन की मेजबानी के लिए विज्ञानभारती, इसरो प्रत्येक सहयोगी और सहभागी के प्रयासों की सराहना करता हूं। आप सब को लिए बधाई और हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

मुझे विश्वास है कि इस तरह के सम्मेलनों के माध्यम से हम अपने लक्ष्यों को हासिल करने की दिशा में आगे बढ़ेंगे।

जय हिन्द!

संबोधन

मंच पर विराजमान उत्तराखण्ड सरकार के शिक्षा मंत्री **डॉ. धन सिंह रावत जी** , इसरो के वैज्ञानिक सचिव **डॉ.ए.एस.शांतनु भटवडेकर जी,** भारतीय सुदूर संवेदन संस्थान, देहरादून के निदेशक, और स्थानीय आयोजन समिति के अध्यक्ष **डॉ. ए.एस.आर.पी. सिंह जी,** विज्ञानभारती के राष्ट्रीय **सचिव श्री प्रवीण रामदास जी** और इस समारोह में उपस्थित **स्वयंसेवक**, इसरो बेंगलुरु के **अधिकारी गण,** आईआईआरएस, वाडिया और **उत्तरांचल विश्वविद्यालय के कुलपति, उत्तराखंड सरकार के विभिन्न मंत्रालयों के अधिकारी गण और छात्र छात्राओं।**